भारतीय दर्शन की विचारधारा (भाग I)

//

भारतीय दर्शन की विचारधारा - रुढ़िवाद

भारतीय दर्शन, भारतीय उपमहाद्वीप में उत्पन्न दार्शनिक विचारधारा की परंपराओं को संदर्भित करता है। इसे दो विचारधाराओं में विभाजित किया गया है: रुढ़िवाद (आस्तिक) और अपरंपरागत (नास्तिक) (Orthodox and Heterodox)

रुढ़िवादी विचारधारा का मानना था,कि वेद सर्वोच्च ग्रंथ हैं जिनमें मोक्ष के रहस्यों को शामिल किया गया है।

सांख्य दर्शन

- कपिल मुनि द्वारा स्थापित।
- दर्शनशास्त्र का सबसे प्राचीन दर्शन।
- इसके अनुसार यथार्थवाद, पुरुष (स्व, आत्मा या मन) और प्रकृति (जड़, उत्पत्ति, ऊर्जा) से उत्पन्न होता है।
- **इसके विकास की दो अवस्थाएँ हैं:**
  - मूल सांख्य (भौतिकवादी दर्शन)
  - नूतन सांख्य (आध्यात्मिक दर्शन)

योग दर्शन (दो प्रमुख तत्वों का संघ)

- पतंजलि द्वारा स्थापित।
- मनुष्य, ध्यान और शारीरिक योग क्रियाओं के संयोजन से मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

मोक्ष (Freedom) प्राप्ति के साधन	प्राप्ति के स्वरूप
यम	स्व-नियंत्रण का अभ्यास
नियम	जीवन को नियंत्रित करने हेतु नियमों का पालन
प्रत्याहार	विषय का चयन
धारणा (Dharna)	मन को स्थिर करना (चयनित विषय पर)
ध्यान	चुने हुए विषय (पूर्वकथित) पर ध्यान केंद्रित करना
समाधि	यह मन और विषय का समागम है और इससे अंततः स्व भंग (dissolution) होता है

न्याय दर्शन

- गौतम ऋषि द्वारा स्थापित।
- इसके अनुसार, सब कुछ तर्क और अनुभव पर आधारित होना चाहिये।
- **ज्ञान प्राप्त करने के साधन:** प्रत्यक्ष, अनुमान, तुलना और मौखिक शब्द।

वैशेषिक दर्शन

- ऋषि कणाद द्वारा स्थापित।
- सब कुछ अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी और ईथर (आकाश) द्वारा सृजित है।
- विकसित परमाणु सिद्धांत (सभी भौतिक वस्तुएँ परमाणुओं से निर्मित हैं)।
- **विश्वास:**
  - ईश्वर एक मार्गदर्शक कारण (Guiding Principle) हैं।
  - कार्मिक नियम ब्रह्मांड का मार्गदर्शन करते हैं।

मीमांसा दर्शन/पूर्व मीमांसा

- जैमिनी ऋषि द्वारा स्थापित।
- वेद शाश्वत हैं और सभी ज्ञान से युक्त हैं।
- धर्म का अर्थ वेदविहित कर्त्तव्यों का पालन करना है।

वेदांत दर्शन (वेदों/उपनिषदों का अंत)

- उपनिषदों की दार्शनिक शिक्षाएँ (वेदों में रहस्यवादी/आध्यात्मिक चिंतन)।
- **उप-दर्शन:**
  - **अद्वैत (आदि शंकराचार्य):** वैयक्तिक स्व (आत्मन) और ब्रह्म दोनों एक ही हैं।
  - **विशिष्टाद्वैत (रामानुज):** सारी विविधता एक एकीकृत समग्रता (Unified Whole) में समाहित है।
  - **द्वैत (माधवाचार्य):** ब्रह्म और आत्मा (Brahman and Atman) दो अलग-अलग तत्व हैं।
    - भक्ति मोक्ष का मार्ग है।
  - **द्वैताद्वैत (निम्बार्क):** ब्रह्म सर्वोच्च वास्तविकता है।
  - **शुद्धाद्वैत (वल्लभाचार्य):** ईश्वर और व्यक्ति एक ही हैं।
  - **अचिंत्य भेद अभेद (चैतन्य महाप्रभु):** वैयक्तिक स्व [जीवात्मा (Jīvatman)] ब्रह्म से भिन्न भी है और नहीं भी।

Drishti IAS

और पढ़ें: भारतीय दर्शन की विचारधारा

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/indian-school-of-philosophy-part-i-1